~~37~~ 1HBR BKraman 39

1-4-67 ओम शान्ति रात्रीक्लास

कोई-2 भित्र सम्बन्धियों की भी सर्विस करते है। यह भी अच्छा है। उन बेचारों को पूरी पहचान नही है कि बाबा से हमको बेहद का वर्सा मिलेगा सो पूरा ज्ञान नही है। भल शिव बाबा को याद करते है परन्तु यह नही जानते है कि उनसे हमको वर्सा मिलना है। उनको इतनी खुशी नही हो सकती जितनी कि याद दिलाने वाले को होगी। और खुशी भी तब हो जब कि योग में रह और दूसरों का भी कल्याण करें। नम्बरवार है। सिर्फ यह हड्डी समझाना है कि ऊँच ते ऊँच भगवान है। उनकी ही याद अव्यभिचारी याद है। वो पतित पावन है। उनकी याद से पाप नाश होंगे। और तो कोई पतित पावन है नही। ऊँच ते ऊँच बेहद का बाप वो है। यह ज्ञान तुम बच्चों को ही है। वो तो जानते ही नही है। बाप आते है तो जरूर वर्सा देते है 21 जन्मों का। फिर आवेंगे तब जब कि वर्सा देना होगा। बेहद के बाप से वर्सा एक ही बार मिलता है। लौकिक बाप से तो हर जन्म में मिलता है। सर्विस करने की युक्तियाँ बहुत है। त्रिमूर्ती शिव का बैज भी पड़ा हुआ होगा तो कोई भी अकर पूछेगा। यों तो पाकेट से निकाल कर दिखा कर समझाना चाहिये। लिटरेचर हाथ में दे देना चाहिये। वैसे भ लोग लिटरेचर देते रहते है। गीता का भगवान वाला जो लिखते है वो भी अच्छा है। समझाने का बहुत सहज है। बाप रचता एक ही है। यह सृष्टी का चक्र फिरता है यह तो बहुत सहज है समझाने का। सतयुग वो ही होगा फिर संगम युग वो ही है ना। उसमें फर्क कब पड़ नही सकता है। ड्रामा हू-बहू चलता रहता है। बच्चों को खुशी होनी चाहिये कि हमको शिव बाबा ने एडाप्ट किया है। उनसे ऊँच कुछ है नही। पहचाना और सतयुग में आने लायक बना। बाकी है मेहनत पर। सो तो सर्विस से पता पड़ता है। आगे चलकर जास्ती पता पड़ जावेगा। सर्विस में भी रहना पड़ता है। बच्चे अगर योग युक्त होकर समझाते है तो बहुतों को कशिश हो सकती है। बहुतों का कल्याण हो सकता है। योग कम है। बहुत डिफीकल्ट है। सैकिंड में जीवन मुक्ति यह अक्षर राईट है। निश्चय होकती और फिर तो मुक्ति जीवन मुक्ति पावन्ति। ज्ञान का विनाश नही होता है। जीवन मुक्ति तो पा लेंगे। चंडाल का पद पाना भी जीवनमुक्ति पना भी तो है ना। सतयुग है ही जीवन मुक्तिधाम। यह है जीवन कथ थय। अपने को निश्चय में रखना खुशी में लाना है। सिर्फ यह समझो कि भगवान हमको पढ़ाते है। वो बाप टीचर सतगुरू है। वो ही बाप टीचर सतगुरू है। यह याद रहे तो भी अहोसौभाग्य। समय तो बहुत मिलता है। ड्रामा में युक्ति रखी हुई है। कितना भी देरी से आवे तो भी बहुत पुरूषार्थ कर ऊँच पद पा सकते है। बाकी माया बहुत प्रबल है। बुद्धि को कहाँ नो कहाँ घुमा देती है। ओम्

24-3-67:-बाबा के पत्र की कापीः- हैल्लो कल्कता निवासी शेर और शेरनियाँ पिन बाप का दादा का
* ** *** **** *** ***** ****
याद प्यार और देखो कि बादल कितनी जोर से वर्षा कर रहे है। क्या ज्ञान सागर के बच्चे ऐसे-2 गजगोर कर कलकत्ते गाँव को बगीचा फूलों का नही बना सकते हो? बुटैनिकल बड़ा गार्डन नां बनाया है तो बागवान कैसे आवे। भक्ति मार्ग के किचड़ में कैसे गले तक फँसे पड़े है। कहाँ तो उस विकारी दुबण से निकालने वाले खुद भी फंस जाते है। पवित्रता के जैसे कि दुश्मन हो जाते है। अपवित्रता ही खुराक बन गई है अपवित्रों की। पुकारते रहते है, अब फिर सहज रास्ता भी बताते रहते है परन्तु हायः तकदीर। ईश्वरिय तदबीर भी पसंद नही आती है। बस हरी बोल हरी बोल करते-2 भी चिल्लाते रहते है। तोबा-2। एक तो रावण का जेल दूसरा साधु समाज का जेल, फिर भक्ति का जेल। भारत को सतयुग डबल सिरताज आकर बनाने फिर से आकर समझाते है। कोटो में कोऊ ही पहचान सकते है। अब बताओ कितने बच्चे, (बादल) गरजने और बरसने वाले बनाये है। सा० करते रहो। याद प्यार पक्टिट क्लास बादलो को देना ओम